**Shiv Tandavam Stotram**
**शिव तांडवम स्तोत्रम**

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्॥१॥

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी- विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम॥२॥

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर- स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि॥३॥

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा- कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि॥४॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर- प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः॥५॥

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा- निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम्।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः॥६॥

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वलद्- धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक- प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम॥७॥

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुर- त्कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः॥८॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा- वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे॥९॥

अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी- रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे॥१०॥

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वस- द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट्।
धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल- ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः॥११॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो- र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम्॥१२॥

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन् विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन्।
विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः शिवेति मन्त्रमुच्चरन्कदा सुखी भवाम्यहम्॥१३॥

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम्।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम्॥१४॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः॥१५॥

jaṭāṭavī-gala-jjala-pravāha-pāvita-sthale
gale’valambya lambitāṃ bhujaṅga-tuṅga-mālikām
ḍamaṭ-ḍamaṭ-ḍamaṭ-ḍamaṇ-ninād a-vaḍḍa-marvayaṃ
chakāra chaṇḍa-tāṇḍavaṃ tanotu naḥ śivaḥ śivam

जटा टवी गल्ल ज्ल्ल प्रवाह पा-वित स्थले
गले वलम्-ब्य लम्बि-ताम भु-जंग तुंग मालि-काम।
डम-ड डम-ड डम-ड ड-मन्नी नाद वड डमर-वयम
चकार चण्ड ताण-डवम तनो तुनः शिवः शिवम्॥१॥

jaṭā-kaṭāha-sambhrama-bhraman-nilimpa-nirjharī–
vilola-vīchi-vallarī-virājamāna-mūrdhani
dhagad-dhagad-dhagad-jvalal-lalāṭa-paṭṭa-pāvake
kishora-candra-śekhare ratiḥ pratikṣaṇaṃ mama

जटा कटाह सम्म भृम भृ-मन्नी लिम्प निर-झरि
वि-लोल विचि वल्-लरी विराज मान मूर्-धनि।
धग धग ध-गज्ज-वल ल-लाट पट्ट पावके
किशोर चंद्र शे-खरे रति प्रति-क्ष-णम मम ॥२॥

dharādharendra-nandinī-vilāsa-bandhu-bandhura–
sphurad-diganta-santati-pramoda-māna-mānase
kṛpā-kaṭākṣa-dhoraṇī-niruddha-durdharāpadi
kvacid-digambare mano vinodam-etu vastu-ni

धरा धरेन्द्र नन्-दिनी वि-लास बन्-धु बन्-धुर
स्फुर-द्-दी गन्त सन्त-ति प्रमोद मान मानसे।
कृपा कटाक्ष धो-रणि निर्-रुद्ध दुर-धरा-पदि
क्व-चिद्-दी गम्बरे मनो विनोद मेतु वस्तुनि॥३॥

jaṭā-bhujaṅga-piṅgala-sphurat-phaṇā-maṇi-prabhā–
kadamba-kuṅkuma-drava-pralipta-dig-vadhū-mukhe
madāndha-sindhura-sphurat-tvag-uttarīya-medure
mano vinodam-adbhutaṁ bibhartu bhūta-bhartari

जटा भु-जंग पिंग्-गल स्फु-रत फणा मणि प्रभा
कदम्ब कुं कुम द्रव प्र-लिप्त दिग्व धू मुखे।
मदान-ध सिन्धु-र स्फुर त्व-गुत् तरिय मे दुरे
मनो विनोद मद भुतम बि-भरतु भूत भर-तरि ॥४॥

sahasra-lochana-prabhṛtya-aśeṣa-lekha-śekhara–
prasūna-dhūli-dhōraṇī-vidhūsara-aṅghri-pīṭha-bhūḥ
bhujaṅga-rāja-mālayā nibaddha-jāṭa-jūṭakaḥ
śriyai cirāya jāyatāṁ chakora-bandhu-śekharaḥ

स-हस-र लो-चन प्र -भृत्य शेष लेख शेखर
प्र-सून धूलि धोरणी विधु स-रांग घ्री पीठ-भूः।
भु-जंग राज माल्या निब्-बध जाट जू-टक
श्रियै चिराय जाय-ताम चकोर बन्धु शेखरः॥५॥

lalāṭa-chatvara-jvalad-dhanañjaya-sphuliṅga-bhā-
nipīta-pañcha-sāyakaṁ naman-nilimpa-nāyakam
sudhā-mayūkha-lekhayā virājamāna-śekharaṁ
mahā-kapāli-sampade śiro jaṭālamastu naḥ

ल-लाट चत्व-र ज्वल धनन जय स्फु लिंग गभा
नि-पित पंच साय-यकम नमन्-नी लिम्प नाय-कम।
सुधा मयू-ख लेखया विराज मान शेख-रम
महा कपा-लि सम्-पदे शिरो जटाल मस्तु नः॥६॥

karāla-bhāla-paṭṭikā-dhagad-dhagad-jjvalad-
dhanañjaya-āhutī-kṛta-pracaṇḍa-pañca-sāyake
dharādharendra-nandinī-kucāgra-citra-patraka-
prakalpanaika-śilpini trilocane ratir mama

कराल भाल पट्-टिका धग धग ध-गज्-ज्वल
ध-नन-ज्या हुति कृत प्रचण्ड पंच सा-यके।
धरा धरेन्द्र नन-दिनि कु-चाग्र चित्र पत्रक
प्र-कल्प नेक शिल्-पिनी त्रि-लोच नेर तिर मम ॥७॥

navīna-megha-maṇḍalī-niruddha-durdhara-sphurat-
kuhū-niśītha-nīta-maḥ prabandha-baddha-kandharaḥ
nilimpa-nirjharī-dharaḥ stanotu kṛtti-sindhuraḥ
kalā-nidhāna-bandhuraḥ śriyaṁ jagad-dhurandharaḥ

नवीन मेघ मण्डली नि-रुद्ध दु-रध स्फु-रत्
कुहु निशि थिनी तमः प्र-बन्ध बध कन-धरः।
नि-लिम्प निर-झरि धर स्तनोत कृत सिन-धुर
कला निदान बन्-धुर श्री-यम जग धु-रन-धरः ॥८॥

praphulla-nīla-paṅkaja-prapañca-kālima-prabhā-
valambi-kaṇṭha-kandalī-ruci-prabaddha-kandharam
smara-cchidaṁ pura-cchidaṁ bhava-cchidaṁ makha-cchidaṁ
gaja-cchidāndhaka-cchidaṁ tam-antaka-cchidaṁ bhaje

प्र-फुल्ल नील पंकज प्र-पंच काली मा-प्रभा
व-लम्बी कण्ठ कन्-दलि रूचि प्र-बद्ध कन्-धरम।
स्म-रच्च-छि-दम पुर्-रच्च-छि-दम भव्-वच-छि-दम मख्-खच-छि-दम
गज्-जच-छि-दान धग्-गच-छि-दम टी-मन्त कच्-छि-दम भजे ॥९॥

akharva-sarva-maṅgalā-kalā-kadamba-mañjarī-
rasa-pravāha-mādhurī-vijṛmbhaṇā-madhuvratam
smarāntakaṁ purāntakaṁ bhavāntakaṁ makhāntakaṁ
gajāntakāndhakāntakaṁ tam-antakāntakaṁ bhaje

अ-खर्व सर्व मंगला कला कदम्ब मन्-जरी
रस प्रवाह माधुरी वि-जिम्म भणाम मधु व्रतम।
स्म-रांत-कम पु-रांत-कम भ-वांत-कम म-खांत-कम
ग-जांत कांध कान्त-कम नमन्त कान्त-कम भजे ॥१०॥

jayatvad-abhravibhrama-bhramad-bhujanga-mashvasa-
dvinirgamad-krama-sphurat-karāla-bhāla-havyavāṭ
dhimid-dhimid-dhimi-dhvanan-mṛdaṅga-tuṅga-maṅgala-
dhvani-krama-pravartita-prachaṇḍa-tāṇḍavaḥ śivaḥ

जय त्वद भृवि भृम भृम-द भु-जंग गमश-वस
द्वि-निर गमत् क्रम स्फु-रत् कराल भाल हव्य वाट।
धिमि धिमि धि-मीत ध्वन मृ-दंग तुंग मंगल
ध्वनि क्रम प्र-वर-तित प्रचण्ड ताण्डवः शिवः॥११॥

dṛṣad-vichitra-talpayor-bhujanga-mauktika-srajoḥ
gariṣṭha-ratna-loṣṭhayoḥ suhṛd-vipakṣa-pakṣayoḥ
tṛṇāravinda-cakṣuṣoḥ prajā-mahī-mahendraayoḥ
sama-pravṛttikaḥ kadā sadāśivaṁ bhajāmyaham

दु-शद विचित्र तल्प-योर भु-जंग मौक्ति कस्र जोर
गरिष्ठ रत्न लो-श्यो सु-हृद वि-पक्ष पक्ष-यो।
तृ-णार विन्द चक्षु-षो प्रजा महि महेन-द्रयो
सम प्र-वित्-तिकः कदा सदा शिवम भजा-म्यहम्॥१२॥

kadā nilimpa-nirjharī-nikuñja-koṭare vasan
vimukta-dur-matiḥ sadā śiraḥ-stham-añjaliṁ vahan
vilola-lola-locano lalāma-bhāla-lagnakaḥ
śiveti mantram-uccaran kadā sukhī bhavāmyaham

कदा नि-लिम्प निर-झरि नि-कुंज कोटरे वसन्
वि-मुक्त दुर-मरि सदा शिर स्थम्न-जलि वहन्।
वि-लोल लोल लो-चनो ल-लाम भाल लग्-नक
शिवेति मन्त्र मुच्-चरन कदा सुखि भवा-म्यहम ॥१३॥

imaṁ hi nityam evam-uktam uttamottamaṁ stavam
paṭhan smaran bruvan naro viśuddhim eti santatam
hare gurau subhaktim āśu yāti nānyathā gatiṁ
vimohanaṁ hi dehināṁ suśaṅkarasya cintanam

इमम हि नित्य मेव मुक्त मुक-तम्मो तवम स्त्वम
पठन स्मरन भ्रु-वन्नरो वि-शुद्धि मति सन्त-तम।
हरे गुरौ सु-भक्ति मा-शु याति नान-यथा गतिम्
वि-मोहनम हि देहि-नाम सु-शंकर-अस्य चिंत-नम ॥१४॥

pūjāvasānasamaye daśavaktragītaṁ
yaḥ śambhupūjanaparaṁ paṭhati pradoṣe।
tasya sthirāṁ rathagajendraturaṅgayuktāṁ
lakṣmīṁ sadaiva sumukhīṁ pradadāti śambhuḥ॥

पूजा व्-सान समये दश वक्त्र गीतम
यः शम्भु पूजन परम् पठति प्रदोषे।
तस्य स्थि-राम रथ गजेंद्र तु-रंग युक्ताम
लक्ष्मी-म सदैव सु-मुखिम प्रद-दाती शम्भु ॥१५॥